NJESR/October 2022/Volume-4/Issue-10 E- ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2022.4.10.1- 5

उदयपुर जिले के ग्रामीण समाज में स्वास्थ्य स्थिति एवं रोग उपचार पद्धतियाँः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(15 September 2022/Revised : 23 September 2022/Accepted : 5 October 2022/Published : 10 October 2022)

नवीन आनन्द
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग,
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, राजस्थान।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व मेवाड़ राज्य की राजधानी था। उदयपुर नगर की स्थापना 1559 में महाराणा उदयसिंह द्वितिय ने की थी। राज्य के दक्षिणांचल में स्थित उदयपुर जिले का विस्तार 23°46 से 26°20 उत्तरी अक्षांश एवं 73° से 74°35 पूर्वी देशान्तर के मध्य है। उदयपुर के पूर्व में चित्तौड़गढ़, उत्तर में राजसमन्द, उत्तर–पश्चिम में पाली, पश्चिम में सिरोही, दक्षिण में डूँगरपुर तथा दक्षिण–पूर्वी भाग में बाँसवाड़ा जिला स्थित है तथा पश्चिम–दक्षिण में गुजरात की सीमा है। जिले में बहने वाली मुख्य नदी बनास है व इसकी विभिन्न शाखाएँ जिले के पूर्वी भाग में बहती है। इसके अतिरिक्त सोम, जाखम, वाकल, सेई, साबरमती, बेड़च आदि नदियाँ भी जिले में बहती है, सभी नदियाँ बरसाती है। जिले में पिछोला, फतहसागर, स्वरूप सागर, उदयसागर तथा जयसमन्द नामक झीलें हैं। फतहसागर, स्वरूप सागर, और पिछोला झील उदयपुर शहर में स्थिति है। उदयसागर तथा जयसमन्द उदयपुर शहरकोट के बाहर स्थिति है। उदयपुर जिले की जलवायु सम शीतोष्ण एवं स्वास्थ्यप्रद है। मौसमी परिवर्तनों का दबाव प्रायः कम ही रहता है। जनवरी, वर्ष का सबसे ठण्डा तथा मई एवं जून सर्वाधिक गर्म माह है। औसत तापमान लगभग 22° सेन्टीग्रेड रहता है। जिले में प्राप्त होने वाले धातु तथा अधातु खनिजों में ताँबा, लेड, जस्ता, चाँदी, मैंगनीज, लौहा, चट्टानी, फॉस्फेट, एस्बेस्टॉस, केल्साइट, लाईमस्टोन, डोलोमाइट तथा संगमरमर प्रमुख है।

उदयपुर जिले के ग्रामीण समाज विशेष तौर पर जनजाति परिवारों की अस्वच्छता एवं स्वास्थ्य स्थिति दयनीय अवस्था में है। अस्वच्छता हमेशा निषेधात्मक प्रभाव पैदा करती है। अस्वच्छता के कारण लोगों में शारीरिक–मानसिक बीमारियों के फैलने का डर बना रहता है। जिससे व्यक्तिगत के साथ–साथ समाज भी प्रभावित रहता है। मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए जरूरी है स्वच्छता। सभी शास्त्रों एवं धर्मो में स्वच्छता के सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश है जैसे स्नातन धर्म में महिलाएँ स्नानादि के बाद ही रसोई का कार्य करती हैं, ऐसे ही पूजा पाठ का विधान भी स्नानादि के बाद ही है। इसमें नित्य स्नान को मनुष्य का प्रथम व अनिवार्य कर्तव्य कहा गया है। वेद और स्मृतियों में भी किये गये समस्त कार्य स्नानमूलक है। भारतीय संस्कृति में बाहर से आये व्यक्ति के घर में प्रवेश से पूर्व पैर धुलाने तथा भोजन से पूर्व व पश्चात हाथ धोने व कुल्ला कर भीतरी व बाहरी शुद्धि का एकमात्र उद्देश्य स्वच्छता व अच्छा स्वास्थ्य ही है।

अस्वच्छता या गंदगी से जल जनित और वेक्टर जनित रोग होते है जैसे टाइफाइड, हैजा, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि नतीजन शारीरिक स्वास्थ्य हमेशा कमजोर रहता है, स्वच्छता का स्वास्थ्य से सीधा सम्बन्ध है। स्वास्थ्य प्रत्यक्ष रूप सामाजिक सम्बंधों को भी प्रभावित करता है। गाँधी जी ने भी भारत की अस्वच्छता से नाराज होकर देश को पश्चिमी समाज की स्वच्छता समझने का संदेश दिया था। हमारे समाज में स्वच्छता जाग्रति के जितने प्रयास होते हैं उतने स्वच्छता प्राप्ति हेतु नहीं होते। यदि

स्वच्छता प्राप्ति हेतु प्रयास किये जाते तो, खुले में शौच जाने वालों की संख्या 2015 में 595 लाख नहीं होती। सामाजिक अन्तक्रियाओं में सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने में स्वच्छता अनिवार्य है। स्वच्छता का महत्व राजनैतिक, शैक्षिक, सामाजिक, पर्यायवरण या फिर आर्थिक क्षेत्र ही क्यों न हो सब पर पड़ता। इसलिए कह सकते हैं कि– स्वास्थ्य पूर्णता स्वच्छता के द्वारा सम्भव है।

उदयपुर जिले के ग्रामीण समाज में स्वच्छता तथा अस्वच्छता से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन एवं स्वास्थ्य स्थिति एवं उपचार पद्धतियों की जानकारी प्राप्त करने हेतु अध्ययन क्षेत्र के गाँव काया तहसील गिर्वा जिला उदयपुर का अवलोकन एवं सर्वेक्षण किया गया। पूरे गाँव में अनुसूची के माध्यम से स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की गई। गाँव काया से पुरुष उत्तरदाता **अमरलाल** और महिला उत्तरदाता के रुप में **जमना बाई** को **व्यक्तिगत अध्ययन** के तौर पर उनके द्वारा बताए गए तथ्यों को एकत्रित कर अध्ययन में शामिल किया गया। **पुरूष उत्तरदाता के रूप में अमर लाल** पिता पांचा गाँव काया तहसील गिर्वा जिला उदयपुर और **महिला उत्तरदाता के रूप में जमना बाई** पत्नि भेराजी मीणा गाँव काया तहसील गिर्वा जिला उदयपुर को शामिल किया गया।

काया गाँव में अवलोकन एवं सर्वेक्षण के दौरान पाया कि गाँव में हर स्तर पर स्वच्छता का अभाव है। फिर भी जिन परिवारों का उल्लेख अध्ययन में किया गया है उनकी स्थिति स्वच्छता के सन्दर्भ में अच्छी है। वे परिवार स्वच्छता का ध्यान रखते हैं। उन्होंने भी सरकार द्वारा देय अनुदान से शौचालय बनवाये हैं। परन्तु वे भी इनका उपयोग न करके खुले में शौच जाते हैं। इनका कहना है कि पानी के अभाव के कारण तथा प्रतिदिन साफ–सफाई कौन करे, इसलिए खुले में शौच हेतु चले जाते हैं। शौचालय का उपयोग नहीं करने या शौचालय में गंदगी पाये जाने के कारण अस्वच्छता का प्रभाव से काया गाँव के अधिकांश परिवारों की स्वास्थ्य स्थिति निम्न है। हालांकि स्वास्थ्य निम्न रहने की अनेक वजह हो सकती है लेकिन अस्वच्छता भी उनमें से एक मुख्य वजह है। और इस वजह से वे बरसात के समय अधिक बीमार पडते हैं। आज भी लोग झाड़ फुंक, तंत्र–मंत्र और दौरा–ताबीज से बीमारी का ईलाज करते है और परम्रागत चिकित्सा पद्धति का प्रचलन अध्ययन क्षेत्र में अधिक है। वर्तमान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की तत्परता एवं चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के कारण लोग आधुनिक चिकित्सा पद्धति का प्रयोग कर रहे हैं।

स्वच्छता एवं रोग उपचार पद्धतियों में शिक्षा व जागरुकता के अभाव में ग्रामीण लोग परम्परागत चिकित्सा पद्धति पर ही निर्भर है। काया गाँव के लोग भी इससे अछूते नहीं हैं और ग्रामीण सामुदायिक परिवेश, सांस्कृतिक प्रतिमान एवं सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ स्वास्थ्य दशाओं को प्रभावित करती हैं। जनजाति समुदायों में व्याधि की विभिन्न दशाओं के प्रति उनके दृढ विश्वास को प्रकट करते है। रोगी के उपचार हेतु परम्परागत व धार्मिक चिकित्सा जिसमें तन्त्र–मंत्र, झाड़–फूक, टोना–टोटका, पूजा–पाठ एवं जड़ी बूटियों का प्रयोगः जनजातियों में बहुधा प्रचलित है।

''सर्व जनो सुखानि भवन्तु

यह कहावत स्पष्ट करती है कि प्राचीन काल से ही स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। स्वास्थ्य माननीय संसाधनों का महत्वपूर्ण सूचक है। एक स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करता है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में शिक्षित स्वस्थ जनसंख्या उत्पादन का सक्रिय साधन व आर्थिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करती है। देश की उत्पादन क्षमता व शक्ति का मापदण्ड स्वास्थ्य होता है। केवल रोगो का न होना ही स्वास्थ्य नहीं हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार भी स्वास्थ्य वह स्थिति है जिसमें सम्पूर्ण भौतिक, मानसिक एवं सामाजिक कुशलता पाई जाती है। केवल बीमारियों की अनुपस्थिति ही स्वास्थ्य नहीं है।''

स्वास्थ्य से सम्बन्धित संस्कृत की एक सुप्रसिद्ध उक्ति है कि ''शरीर माध्य खलु धर्म साधनम्

जिसका अर्थ है जीवन में अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए उत्तम स्वास्थ्य की प्राथमिक रूप से महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

SOUND MIND IS SOUND BODY

अर्थात्

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क होता है।''

किसी भी देश का स्वास्थ्य वहाँ के नागरिकों के स्वास्थ्य, समुदाय के स्वास्थ्य और स्वस्थ वातावरण जिसमें देश के नागरिक व समुदाय रहते है उनका योग है। जिस देश की जनता स्वस्थ है वह देश आर्थिक व सामाजिक विकास में उन्नति करता है। इसलिए कह सकते स्वास्थ्य एक अमूल्य साधन है जिसका साध्य देश में सामाजिक और आर्थिक प्रगति करना है। अच्छा स्वस्थ मनुष्य व देश की आर्थिक व सामाजिक विकास इस मायने में है कि एक बीमार व्यक्ति की तुलना में एक स्वस्थ व्यक्ति अधिक उत्पादन करता है जिससे समाज हर तरह से विकसित होता हैं जबकि बीमारियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज पर वित्तीय भार के साथ अनेक सामाजिक समस्याएं को जन्म देती है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से ही देश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की समुचित सुविधाएं उपलब्ध करवाने हेतु अनेक प्रयास किये है। अभिनव कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य योजनाएं प्रारम्भ की पर बढती जनसंख्या व नगरीकरण के दबाव ने कई रूपों में सार्वजनिक स्वास्थ्य को परोक्ष व अपरोक्ष रूप से प्रभावित किया है। आज देश में अत्यधिक स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार होने के उपरान्त भी बीमारियाँ बढ़ रही है। देश के लिए स्वास्थ्य योजनाएं बनाने वालों के लिए विभिन्न बीमारियाँ एक चुनौती बनी हुई. है। देशवासियों को स्वस्थ रखना केवल इस बात पर निर्भर नहीं करता कि डॉक्टरों एवं अस्पतालों की संख्या में वृद्धि कर दी जाए। जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप प्रतिवर्ष हम एक नये आस्ट्रेलिया को जन्म दे रहे हैं। जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है। यहाँ जनसंख्या का छठा भाग 6 वर्ष से कम आयु के ग्रामीण एवं बच्चों का है। इनमें से अधिकांश ग्रामीण एवं जनजाति परिवारों के बच्चों का बचपन निम्न आर्थिक व सामाजिक विपरित परिस्थितियों से गुजरता है। कई बच्चे जन्म से लेकर एक वर्ष की आयु भी पूरी नहीं कर पाते है।

स्वास्थ्य को निर्धारित एवं प्रभावित करने वाले कारक :

स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कई तत्व एवं कारक है। इनमें से कई कारक ऐसे है जो व्यक्ति विशेष की शारीरिक संरचना एवं वातावरण पर निर्भर करते है। ये कारक निम्न लिखित है।

(1) मानव शरीर विज्ञान।
(2) वातावरण।
(3) जीने के विभिन्न तरीकें।
(4) आर्थिक स्थिति।
(5) स्वास्थ्य सेवाएं।

अध्ययन क्षेत्र में चिकित्सा उपचार की विभिन्न पद्धतियाँ प्रचलित है।

1 परम्परागत चिकित्सा पद्धति।
2 परम्परागत वनौषधियों द्वारा।
3 ओझाओं व पारलौकिक शक्तियों द्वारा।
4 आधुनिक चिकित्सा पद्धति।

परम्परागत चिकित्सक एवं चिकित्सा पद्धति :

मनुष्य के जन्म के विकास के साथ–साथ उस समाज मे होने वाले रोगों व्याधियों, दूर्घटनाओं एवं अस्वस्थता की स्थिति के निवारण हेतु स्व–नियोजित चिकित्सा पद्धति परम्परागत चिकित्सा प्रविधियों पर आधारित एक तार्किक एवं युक्ति युक्त वैज्ञानिक विधा के रूप में प्रतिस्थापित हुई है। दवाओं की खोज एवं उनका उपयोग उनके स्वास्थ्य को बनाए रखने और रोगों को नियंत्रित करने लिए निरन्तर किया

जाता रहा है। परम्परागत चिकित्सक, वैध, भोपा, स्थानीय चिकित्सक अपने सामुहिक परिवेश का एक संक्रिय अंग होते है। परम्परागत चिकित्सकों से तात्पर्य ऐसे लोगों से है, जिन्होनें किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से आधुनिक चिकित्सा शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त तो नहीं किया है, परन्तु क्षेत्र विशेष में अपना सम्पूर्ण अथवा कुछ समय लोगों के स्वास्थ्य संरक्षण में लगाते है।

परम्परागत वनोषधियों द्वारा :

नवीनतम आधुनिक तकनीकों एवं औषधियों व निदान के साधनों के आने के बाद भी जिले के जनजातीय समाज में इनका प्रयोग नगण्य है तथा ये आज भी प्राचीन परम्पराओं के अनुसार वनौषधियों की सहायता से रोगों का उपचार स्वयं ही अपने स्तर पर करते हैं। इनमें विशेष परिवर्तन नहीं आया है।

उपचार

1. नीम की पत्तियों का सेवन करने से गर्मी व त्वचा की बीमारी में आराम मिलता है।
2. चोट पर या सूजन वाले अंगो पर एरण्ड के पत्तों को बांधकर रखने से दर्द व सूजन दोनों में आराम मिलता है।
3. पीपल की जड़ों का सेवन करने से सर्प का जहर कम हो जाता है।
4. महुवे की शराब को छाछ के साथ सेवन करने से निमोनिया ठीक हो जाता है।
5. कब्ज होने पर त्रिफला (हरडे, बरडे, व आंवला) का सेवन कराया जाता है।
6. शरीर में दर्द होने पर या बुखार होने पर दशमूल का काढा अर्थात विभिन्न जडी–बूटियों को औटाकर पिलानें से रोग ठीक हो जाता है।
7. पीपल को दूध में उबालकर 7 दिन तक सेवन करने से ज्वर ठीक हो जाता है।
8. निमोनिया के रोगी को बैगन की जड़ों को निकालकर हल्दी के टूकड़ों के मणिये (माला बनाकर) पहनने से रोगी को आराम मिलता है।

धार्मिक उपचार : (औझाओं एवं पारलौकिक शक्ति)

ग्रामीण जनजातीय लोग अपने देवी–देवताओं के आहवान के लिए जाग देते है। देवी या भैरव वगैरह के सामने ढोल पीटकर धुप जलाते है। ओर उनके आहवान के गीत गाते है। जब देवता प्रकट हो जाए तब बकरें या मुर्गे की बलि दी जाती है। वीर, योगिनी, भूत –प्रेत, चुड़ेल, आदि को शराब की धार, घूघरी और बॉकले (Boiled Grains) मूर्गा आदि का भोग दिया जाता है। वंतरि (स्त्री जाति की मृतात्मा) को राख के लडडू तथा लाल मिर्च का धूप भी दिया जाता है। इन सबकों उतारा करके चौराहे पर पानी का कुडाला भी निकाला जाता है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति :

ग्रामीण समाज में आधुनिक चिकित्सा पद्धति का प्रचार–प्रसार स्वतन्त्रता के पश्चात से ही प्रारम्भ कर दिये गये थे। परन्तु उनके अपेक्षित परिणाम नहीं निकले। कुछ कारणों से इनको अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है जैसे – अशिक्षा, ग्रामों व कस्बों से दूर बिखरे हुए आबाद होना, गरीबी, मुख्यधारा से कटे रहना, आंवटित बजट का सही दिशा में सदूपयोग नहीं होना, औषधियों व चिकित्सकों का क्षेत्रों से दूर होना, आवागमन एवं संदेश वाहन के साधनों की कमी, चिकित्सकों, नर्सों व कम्पाउण्डरों का इन क्षेत्रों में न रूकना आदि ।

निष्कर्षत :

अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण समाज विशेष तौर पर जनजाति समाज में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता कम होने से इनका सामाजिक–आर्थिक स्तर बहुत निम्न है। जागरूकता के अभाव एवं अन्य कारणों से शौचालय का उपयोग कम किया जाता है जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पडता है।

अस्वच्छता का प्रभाव बरसात के मौसम में बीमारी के तौर ज्यादा हो जाता है। क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाएं भी अपर्याप्त है एवं लोगों को इनकी जानकारी भी कम है। जनजातीय लोगों की स्वास्थ्य अवधारणा भिन्न होने एवं आधुनिक चिकित्सा में इनका विश्वास कम होने से जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा का परम्परागत दृष्टिकोण अभी भी विद्यमान है। स्वच्छता एवं स्वास्थ्य दोनों एक–दूसरे के पूरक होने से अध्ययन क्षेत्र के प्रभावित लोगों का आर्थिक स्तर निम्न के कारण स्वास्थ्य का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. लवानिया, डॉ. एम. एम., (1994), ग्रामीण समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर (राज), पृ-299
2. चौधरी, बुद्धदेव, (1996), ''स्वास्थ्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य,'' जनरल ऑफ सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन, पृ–39
3. सिंह, बलवीर, (1992), चिकित्सा समाजशास्त्र एवं जनजाति समुदाय, हिमांशु पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ–12
4. करनपुरिया, रत्नेश, (2001–02), ''दक्षिण राजस्थान में जनजातीय स्वास्थ्य स्थिति,'' मोहन लाल सु.वि.वि., उदयपुर (राज.), पृ–3.10
5. शर्मा, डॉ. सी. एल., (1998), ''भील समाज कला एवं संस्कृति,'' मालती प्रकाशन, विराट नगर, जयपुर (राज.), पृ–234
6. हरकावत, अनिता, (2004),''उदयपुर शहर में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का अध्ययन,'' मोहन लाल सु.वि.वि., उदयपुर (राज.), पृ–1,5,6,39
7. नारायणन, प्रो. सुधा, (1994),''जन स्वास्थ्य एवं परिवार,'' कल्याण रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर (राज.), पृ–1,2,8,71,72,
8. सोलंकी, मीता, (2003–04),''जन संचार के साधन एवं महिला स्वास्थ्य व्यवहार,'' मोहन लाल सु.वि.वि., उदयपुर (राज.), पृ–18,19,25,26
9. भार्गव, नरेश कुमार, (1990), ''आदिवासी समाजों में चिकित्सा व्यवस्था,'' पृ–12,16
10. जैन, हेमेन्द्र कुमार, (2003–04), ''महिलाओं में स्वास्थ्य समस्याएं एवं उपचार,''मोहन लाल सु. वि.वि., उदयपुर (राज.), पृ. 13,14,27,
11. राव, सुश्री मोनिका, (2003), ''रोग उपचार एवं धार्मिक विश्वास,'' मोहन. लाल सु.वि. वि., उदयपुर (राज.), पृ–8
12. वाघेला, डॉ. अनिल, (2019), ''स्वच्छता और पर्यायवरण,'' : m-hindi.Indiawaterportal.org
13. चौरसिया, डॉ. विवेक, (2021), ''आमुख – स्वच्छता और स्वास्थ्य की लक्ष्मी,'' दैनिक भास्कर, पृष्ठ सं.–04